REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

मारीशस में हिंदी प्रसार और राष्ट्रवादी चेतना का आदि-काल

विवेक मोहन
इतिहास विभाग , दिल्ली कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय.

सार

भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास विशेष रूप से उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण से, हिंदी भाषा के इतिहास से भी अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। ब्रिटिश उपनिवेशों जैसे फीजी, मारीशस, वेस्ट इंडीज के विभिन्न भागों में भी कमोबेश यही स्थिति रही जिसमे भाषा ने प्रवासी समुदायों को एकीकृत करने में विशिष्ट योगदान ही नही दिया अपितु राष्ट्रवादी चेतना को मूर्त रूप भी प्रदान किया जिसमे उनकी दासता जैसे सामान्य अनुभव के मुद्दों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और वर्ग-जाति के अंतर के बावजूद भी प्रवासियों को एकसूत्र में पिरोने का प्रयास किया। प्रस्तुत लेख में बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में मॉरिशस के प्रवासी भारतीय समाज द्वारा हिंदी के उन्नयन और विशेष तौर पर इस बिंदु पर कि हिंदी भाषा ने किस प्रकार भारतवंशी समुदायों को एक्ताबद्द करने में किस प्रकार योगदन दिया,पर केन्द्रित है। रामायण, सुंदर-कांड पाठ, गिरमिट –गीत तो गुलामी के आरम्भ से ही इन्हे प्रेरणा देते थे बाद में केश्तो, गणेशी, रसपुंज, हरिदत्त, हीरालाल, देवेन्द्र, बलदेव, और हरी सरीखे हिंदी लेखकों ने राष्ट्रवादी चेतनता के साथ सामजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए समाज में भारतीयता को मजबूत किया। पत्रकार से लेकर कहानीकार और कवि की भूमिका का निर्वहन करते हुए उन्होंने हिंदी के प्रचार प्रसार में ऐतिहासिक योगदान दिया। आज के समय में हिंदी की यहाँ उल्लेखनीय स्थिति के अतीत में यह आरंभिक दौर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

परिचय

ब्रिटिश साम्राजवादी विस्तार के साथ-साथ विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर श्रमिकों का भी बलात प्रवासन हुआ जो 'कुली-प्रथा', 'शर्तबंदी' 'नई दासता की प्रणाली','गिरमिट' या 'गिरमिटीया' प्रणाली के अंतर्गत समाजशास्त्र, इतिहास, साहित्य आदि में अध्ययन का एक विशिष्ट विषय है।1834 से 1920 तक बड़ी संख्या में यहाँ प्रवासी आए जिनमे पूर्वोत्तर, पश्चिम बंगालपूर्वी उत्तर प्रदेश से काफी मजदूर थे। सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में पुर्तगाली फिर डच और फ़्रांसिसी नियंत्रण में रहने के पश्चात् 1803-15 के युद्धों में मारीशस ब्रिटिशों के अधीन आया जो अंततः 1968 में स्वतन्त्र हुआ और 1992 के बाद से गणतंत्रात्मक लोकतांत्रिक देश के रूप में साहित्य और कला के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। हाल ही में विश्व हिंदी कांफ्रेंस (18-20 अगस्त 2018) में न केवल हिंदी को वैश्वीकरण बल्कि संयुक्त राष्ट्र-संघ की प्रमुख भाषा के रूप में भी प्रयोग होने पर जोर दिया गया परन्तु खेद का विषय है कि भारतवंशियों कि बड़ी संख्या होने पर भी विश्व हिंदी सचिवालय ने बताया की फ्रांसिसी और अंग्रेजी ही सरकार द्वारा उन्नयन की भाषा है जबकि हिंदी केवल एक एशियाई भाषा के रूप में है जिसका इन भाषाओं के आलावा क्रियोली जैसी मिश्रित भाषा से भी संघर्ष है। प्रस्तुत लेख में मारीशस में हिंदी भाषा के आरंभिक विस्तार पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जिसे बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से करीब 1930 के दशक तक माना जा सकता है। यह उल्लेखनीय है कि इसी चरण में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था और न केवल भारतवर्ष में ही नही अपितु मारीशस में भी हिंदी भारतवंशियों को जोड़ने का कार्य कर रही थी। अपने आरंभिक चरण में हिंदी विभिन्न गिरमिट समुदायों

के अनुभव, शोषण-अभिव्यक्ति, परदेस में उनकी पीड़ा, कार्य-दशाओं आदि का वर्णन तो करती है पर सबसे महत्वपूर्ण रूप से उन्हें दिखाए गये स्वप्नों के विपरीत अनुभवजनित प्रतिकूल परिस्थितियों का भी जीवंत वर्णन करती है।

मारीशस में भारतवंशियों की जनसँख्या को वहां की कुल जनसँख्या का 68 प्रतिशत तक माना जाता है। प्रवासियों ने उन्नीसवीं शताब्दी से ही *रामायण, सुंदर-कांड हनुमान-चालीसा, सत्यनारायण, आल्हा, गीता*आदि के पाठ से अपनी संस्कृति-संस्कारों को संजो कर रखने का प्रयास किया।जैसा कि प्रसिद्ध विद्वान एरिक होब्सबाम ने भी दर्शाया है कि इतिहासकार और राष्ट्रवाद का सम्बन्ध नशीले पौधों की खेती और नशे के व्यसनी (poppy grower और drug addicts) की भांति होता है। सारे राष्ट्रवादों में इतिहास के ऐसे काल और किस्से चुने जाते है जिनके बारे में स्पष्ट और सटीक जानकारियों का प्राय: अभाव होता है और जो विभिन्न वर्गों को एक समुदाय में एकबद्ध करने में सफल भी होते है जिन पर प्रश्न करना अधार्मिक व असंगत माना जाता है और सामान्य श्रद्धा और विश्वास के बिंदु होते है[1]। औपनिवेशिक और साम्राजवादी शक्तियों के द्वारा किये गये छल-कपट से ये लोग जब यहाँ पहुंचे तो अधिकारियों, ओवेरसियर आदि के अत्यचारों, लम्बे कार्य के घंटों और गुलामी से भी अधिक कष्टकर हालातों में ये वापस आने के लिए अत्यंत व्याकुल थे। इनकी हालत और कार्य-दशाएंप्राचीन ग्रीको-रोमन दासों से भी अधिक ख़राब थी ।इसके बावजूद भी1859 में यहाँ हिन्दू मंदिरों का भीं निर्माण होने लगा जो न केवल इनकी आध्यात्मिक अकांशाओंही नही बल्कि हिंदी के पठन-पाठन का भी महत्वपूर्ण केंद्र बने और संभवतः यहीं से हिंदी के प्रति यहाँ के प्रवासियों में और भी अधिक रुझान बढ़ा। यहाँ पर विभिन्न श्रमिक अपने अनुभव, सुख, दुःख को एक दुसरे को बांटते एवं अपनी संस्कृति, परम्पराओं,भाषा, धार्मिक रीतियों को बचाने और संरक्षित करने के लिए नियमित विमर्श भी करते थे। प्रवासियों के मध्य गिरमिट गीत विभिन्न स्तरों पर लोकप्रिय थे जो आज भी उनके संघर्ष, पीड़ा, यातना को सजीव बना देते है जो सदा से उनकी समाज, शोषण और संस्कृति के प्रति सुस्पष्ट चेतना का जीवंत प्रतीक भी माना जाता है। जिसे अभिमन्यु ने 'चीत्कारों से भरा गूंगा इतिहास' की संज्ञा दी। जैसा किविमलेश क्रांति वर्मा दर्शाते है कि किस तरह से रामचरित मानस जैसे ग्रन्थ इन प्रवासियों को राम-वनवास की भांति प्रेरणा और उम्मीद पैदा करते थे कि ये वनवास रूपी मुश्किल दिन जल्द ही बेहतर दिनों में तब्दील होंगे:

राम बनिइहैं तो बन जईहैं, बिगड़ी बनत बनत बन जाही।
चौदह बरिस रहे बनवासी लौटे पुनि अयोध्या माँहि॥
ऐसे दिन हमरे फिर जईहैं, बंधुवन के दिनजईहैं बीत।
पुन: मिलन हमरौ होई जईहैंजईहैं रात भयंकर बीत[2]॥

सर आर्थर फायर ने अपने अथक प्रयासों से यह संभव बनाया कि भारतीय लोग अपनी भाषा में ही ज्ञान ले सकते थे अथार्त आरम्भ में ही औपनिवेशिक वातावरण में ये लोगविदेशी भाषा को स्वयं पर थोपनें के दबाव से वे बच गये। महात्मा गाँधी 29 अक्टूबर से 1 नवम्बर 1901 के बीच मारीशस आए तथा वहाँ आकर वे प्रवासियों के हिंदी भाषा, भारतीय सभ्यता, संस्कृति के प्रति लगाव देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने बैरिस्टर डॉ मणिलाल जो अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्ति थे को मारीशस में भारतीय प्रवासियों के हितार्थ 1907 में मारीशस भेजा जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से हिंदी एवं अंग्रेजी में हिन्दुस्तानी नामक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ कराया जो भारतीयों के अनुभवों, वेदनाओं और आकांशाओ को एक उपयुक्त स्वर प्रदान कर रहा था। जो सर्वप्रथम 2 मार्च 1913 को प्रकाशित हुई जिसमे वृहत स्तर पर सृजनात्मक हिंदी लेखन एक संगठित रूप में सामने आने लगे और यह पत्र प्रवासियों की अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा माध्यम बन गया। हिन्दुस्तानी समाचार पत्र का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता, उनमे में परस्पर सोहार्द, और विभिन्न नस्लों समुदायों में समानता था जों उस समय के औपनिवेशिक माहौल में एकदम आमूल परिवर्तनवादी प्रतीत होते है वहीँ दूसरी और प्राचीन प्रतीकों को गौरवान्वित करने में भी इस काल के लेखकों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया एवं उनके व्यवहार में में भी परंपरा-आधुनिकता, उदारवादी-कट्टरवादी आदि विरोधाभास देखने को मिलते है। कुल मिलाकर इस काल की रचनाओं में हिंदी पुनर्जागरण काल का प्रभाव भी दिखाई देता है। इस समाचार पत्र ने लगातार भारतीयों में धार्मिक,आर्थिक और सामाजिक असमानता के बावजूद भी उन्हें भारतीयता, ऐतिहासिक धरोहरों, सामान उद्देश्यों और साँझा-संस्कृति के नाम पर एकताबद्ध करने का कार्य भी किया। इस समाचार पत्र में लगातार प्रवासियों और प्रशासकों के बीच क़ानूनी संघर्ष को लिखित रूप में प्रकाशित किया जिसे समय समय सरकारी रोष का भी सामना करना पड़ा। यह सर्वविदित है कि मणिलाल ने मारीशस के सर्वोच्च न्यायालय

में भी जूतें और पगड़ी पहनने के अधिकार को लेकर बड़ा संघर्ष किया था उन्हें जल्द ही भारतवंशी समाज ने अपने निर्विवाद नेता के रूप मे स्वीकारभी किया।

1910 में यहाँ आर्य-समाज ने भी हिंदुस्तान की भांति हिंदी के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया इसी कड़ी में आर्य परोपकारिणी सभा (1925), आर्य कुमार सभा (1925), आर्य प्रतिनिधि सभा (1925), आर्य रविदेव प्रचारिणी सभा (1930) ने भी वहां हिंदी और हिन्दू संस्कृति के उन्नयन में सक्रिय रूप से कार्य किया। 2 मार्च 1913 में हिन्दुस्तानी पत्रिका में प्रकाशित कवि गणेशी या कौलेश्वर सिंह द्वारा रचित '*होली*' को वहां की प्रथम हिंदी कविता माना जाता है जो मारीशस में इंडियन टाइम्स नामक पत्र के संस्थापक भी थे। इस कविता में उनके देशभक्त, समाज-सुधारक. प्रगतिवादी होने के सभी प्रमाण मिलते है ।यह कविता मूल रूप से उपदेशात्मक थी जिसमे भारतीयों के मध्य एकता पर भी बल दिया गया। गणेशी के अलावा गणपतिदास भी इस चरण के प्रमुख कवि थे जिन्होंने ने गोरक्षा पर कई कविताएँ लिखी। जो विषय भारतीय स्वाधीनता-संग्राम से जुड़े थे वैसे ही मुद्दे हमे प्रवासी साहित्य में प्रचुरता से मिलते है। हिंदी, गोरक्षा जैसे विषय शायद भारतीयों को एकताबद्द करने में ज्यादा उपयुक्त थे और समय के माहौल में। ये मुद्देभारत में एक और समुदाय विशेष को एकरूप या समांगीकृत करके एकीकृत धार्मिक पहचान को सुनिशिचित कर रहे थे तथा दूसरी और सामाजिक सोहार्द्द को भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर रहे थे। भारत की अपेक्षा ऐसे मुद्दे मारीशस में यह भारतवंशियों की पहचान को स्थापित कर रहे थे और यहाँ 'हिंदी हिन्दू हिंदुस्तान' जैसी साम्प्रदायिक विभेदीकरण के समरूपी स्थिति नही दिखी बल्कि भारतीयता के नाम पर समाज में एकीकरण हुआ जबकि यहाँ, जैसा कि विभिन्न समकालीन विद्वान् मानते है मारीशस में औपनिवेशिक भारत से भी भयावह स्थिति थी। इस युग के एक अन्य प्रमुख कवि लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी 'रसपुंज' ने भी इसी धारा का अनुपालन करते हुए विभिन्न रचनाओं में भारतवंशियों को गोरक्षा के लिए प्रोत्साहित किया। यह सर्वविदित है कि इन मुद्दों ने आरंभ से ही मारीशस के स्वाधीनता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंततः 12 मार्च 1968 में मारीशस की स्वतंत्रता के पश्चात् यहाँ हिंदी साहित्य का द्रुत गति से विस्तार हुआ और सांगठनिक स्तर पर इससे जुड़े अनेक केंद्र सामने आए। शिवमंगल सिंह 'सुमन', यशपाल, दिनकर जैसे विद्वानों की मारीशस यात्रा ने भी हिंदी के प्रसार-प्रसार को गति प्रदान की और यहाँ अभिमन्यु अनंत जैसे साहित्यकार अस्तित्व में आए।

हिंदी साहित्य की धारा मौखिक कहानी परंपरा से विकसित हुई जो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश तक बहुत सक्रिय थी जिसमे बैठक, बैठकी या बैठका व्यवस्था ने बड़ा योगदान दिया। 1911 से काशीलाल केश्टो द्वारा प्रकाशित '*मारीशस आर्य पत्रिका*', रामअवध शर्मा की मारीशस मित्र पत्रिका हिंदी जनजागरण में मील का पत्थर साबित हुई। मारीशस में हिंदी साहित्य के प्रारंभिक चरण में 1935 से प्रकाशित *दुर्गा*का भी महत्वपूर्ण योगदान है जिसके सम्पादक सूर्यप्रसाद मंगर भगत थे जिनके प्रयासों के फलस्वरूप मारीशस में हिंदी भाषा और साहित्य इस काल में बहुत लोकप्रिय हुआ इसी वर्ष यहाँ हिंदी प्रचारिणी सभा भाषा प्रसार और उन्नयन में सक्रिय भूमिका अदा की। इन्होने 'हिंदी-हिन्दू हिन्दुस्तानी' नारे को आधार मानकर जीवन भर इस दिशा में कार्य किया। इस हस्तलिखित पत्रिका में सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक-राष्ट्रीय सरोकारों से जुड़े विभिन्न सरोकारों पर लेख लिखे गये। सामाजिक अंधविश्वासों, कुरीतियों और असंगत रीतियों पर इस काल के विद्वानों ने कटाक्ष किये। हिंदी प्रचारिणी सभा के जीवन-पर्यंत प्रमुख के रूप में इन्होने साहित्य सृजन और विस्तार में अग्रणी भूमिका निभाई जैसे 'मेरी दादी', 'निर्धन के काउ नाहिं' और 'एक भारतीय कुली की दुःखद गाथा' आदि[3]। शासकीय अत्याचारों एवं प्रतिबंधों के कारण इस काल में साहित्यकारों ने छदम नामों से रचनाएँ लिखीं और अनेक रचनाओं के लेखकों का तो नाम आज तक ज्ञात नही हो पाया है। इनके आलावा डी. हरिदत्त, हीरालाल, देवेन्द्र, बलदेव प्रसाद, हरी शर्मा आदि लेखकों ने मारीशस में हिंदी के इस आदिकालीन दौर में राष्ट्रवादी चेतना के विस्तार के साथ-साथ सामाजिक समरसता, पारस्परिक एकता पर बल दिया और सामजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों पर कड़ा प्रहार किया। भारी शोषण, प्रशासनिक प्रतिबंधो और निरंतर भारतीय भाषाओ, परम्पराओं और प्रतीकों को निष्कृष्ट साबित करने की नीति के फलस्वरूप भी इस काल के साहित्यकारों ने हिंदी को बचाये रखा जिसमे पाठकों ने भी लगातार संरक्षण और सहयोग दिया।

निष्कर्ष

समाज की शाखाओं, मणिलाल आदि ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिनके बाद वहां पर मौजूद अनेकों लेखकों ने हिंदी के द्वारा राष्ट्रवाद की दौर को शक्ति प्रदान की जो आज भी विद्वानों के मध्य शोध का विषय है और डायस्पोरा अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय भी बना हुआ है ।इस प्रकार हिंदी भाषा के प्रसार के साथ साथ राष्ट्रवादी चेतना का विकास भी बीसवीं शताब्दी के मॉरिशस की प्रमुख विशेषता थी। जहाँ एक और 'प्रिंट संस्कृति' (बेनेडिक्ट एंडरसन ने '*इमेजिन्ड कम्युनिटीज*' नामक पुस्तक में राष्ट्रवाद के विविध पक्षों को इंगित किया है) के प्रसार ने समुदायों को एकीकृत करने में विशेष भूमिका

निभाई वही दूसरी और सामान जीवन-दशाओं ने भी विभिन्न विभेदों के बावजूद राष्ट्रवादी धारा को मजबूत किया। मॉरिशस में आरंभिक गिरमिट अलग अलग धार्मिक साहित्य के पाठन से और बाद में हिंदी के सशक्त आन्दोलन से भारतीयता से विलग नही हुए जिसमे गाँधी, आर्यसमाज की शाखायों, मानिकलाल जैसे नेतृत्वकारी लोगों ने अमूल्य योगदान दिया॥

सन्दर्भ

1. रोमिला थापर. पास्ट एंड प्रेजेंट. अलेफ बुक कंपनी. नई दिल्ली.2014. प. 110
2. विमलेश क्रांति वर्मा. मारीशस की हिंदी कहानियां, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली . 2011. प 10.
3. कमल किशोर गोयनका (सं.) मॉरिशस की हिंदी कहानियां साहित्य अकादमी.नई दिल्ली. 2014. पं. 17.

सन्दर्भ-सूची

1. विनोदबाला अरुण. मॉरिशस की हिंदी कथा-यात्रा. प्रकाशन संस्थान. 1997.
2. इन्द्रदेव भोला इंद्रनाथ. मॉरिशस से लघु-कथाएं. स्टार पब्लिकेशन. नई दिल्ली. 2006.
3. कमल किशोर गोयनका (सं.) मॉरिशस की हिंदी कहानियां साहित्य अकादमी.नई दिल्ली. 2014.
4. विमलेश क्रांति वर्मा (सं.). मॉरिशस का सृजनात्मक हिंदी. साहित्य अकादमी. नई दिल्ली. 2016.

LBP PUBLICATION